विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग अष्टम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-०५/०९/२०२०(एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ:-सप्तम: पाठनाम पर्यावरण – विज्ञानम्

गद्यांश: - पृथिव्या: उर्वरा शक्तिमपि अनुदिनम् अपचीयते । प्रकृते: मनोहराणि दृश्यानि विकृतिमाप्नुवन्ति महानगरेषु तैलजेन धूमेन तु प्राणिनां श्वसनमपि कठिनमपि जातम्।परं स्वार्थान्धा: मानवा:पर्यावरणस्य रक्षार्थं नाद्यापि विचारयन्ति।

संस्कृत वाङ्मयस्य अध्ययनेनैव सुस्पष्टमिदं यत् संस्कृतकविभि: यादृश्या: सूक्ष्मया दृष्टया पर्यावरणस्य प्रत्येकं पक्ष:चित्रित: तया पर्यावरणं तत् प्रदूषणं प्रति च तेषां पूर्ण प्रबुद्धता सूच्यते ।

शब्दार्था:- अपचीयते -घटती जा रही है , अनुदिनम् - दिनानुदिन उर्वरा शक्तिमपि – उपजाऊ शक्ति भी , विकृतिमाप्नुवन्ति - दोषयुक्त हो रहे हैं ,श्वसनपि -सांस भी रक्षार्थं -रक्षा के लिए , नाद्यापि -आज भी नहींतैलजेन धूमेन - तेलजनित धूंएं से ,

अर्थ -पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति भी दिन घटती जा रही है। प्रकृति के मनोहर दृश्य दोष को प्राप्त कर रहे हैं। महानगरों में तेलजनितधूंएं से जीवों का सांस लेना भी कठिन हो गया है। किन्तु स्वार्थ में अंधे मनुष्य पर्यावरण की रक्षा के लिए आज भी विचार नहीं कर रहे हैं।

संस्कृत वाङ्मय के अध्ययन से स्पष्ट है कि संस्कृत कवियों के द्वारा जैसी सूक्ष्म नजर से पर्यावरण के प्रत्येक पक्ष चित्रित किया गया है, उसके द्वार पर्यावरण को उस प्रदूषण के प्रति उनकी पूर्ण प्रबुद्धता सूचित होता है।